''हुसैनी दूत''

मौलाना निसार अहमद साहब ज़ैनपूरी सम्पादक अलवायज़ लखनऊ

इमाम हुसैन (अ0) मक्क–ए–मुअज़्ज़मा में थे कि कूफ़ियों के पत्र आने लगे कि कूफ़ा आपके आदरणीय पिता की राजधानी है। आप खिलाफ़त के हक़दार और पात्र हैं। इसलिए शीघ्र ही पधारें। हमको अधर्म के आक्रमण और हमले से बचाइए। इतिहास में यहाँ तक मिलता है, अन्त में जो पत्र पहुँचे उनका मज़मून यह था कि ''यदि आपने आये तो हम प्रलय के दिन आपके नाना से स्पष्ट रूप से कह देगें कि हमने अपने मार्गदर्शन के लिए आपके नवासे हुसैन (अ0) को उस समय बुलाया, जिस समय
अधर्म (कूफ़्र) का अन्धकार छाया हुआ था। लेकिन उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया और हमको बिना इमाम और पदप्रदर्शक के छोड़ दिया आपने कूफ़ियों के आग्रह पर अपने चचा के सुपुत्र मुस्लिम बिन अक़ील को अपना दूत बना के कूफ़े भेजा। मुस्लिम मक्के से मदीने पहुंचे।
और यात्रा तय कर के आप कूफ़े पहुँचे। मुख़्तार बिन उबेद–ए–सकफ़ी के घर पर निवास किया जो क़ौम के अगुआ और सरदार थे। आप सौजन्य के धनी और पैग़म्बर के अहले बैत यानी परिजनों के शत्रुओं के लिए ईश्वरीय प्रकोप थे।

कूफ़े के लोगों ने मुस्लिम बिन अक़ील के हाथों पर बैअत करने में एक दूसरे पर पहल की। थोड़े ही समय मे बारह हज़ार व्यक्तियों ने बैअत कर ली। लेकिन कुछ पुस्तकों में 18 हज़ार की संख्या बताई गई है। ''तज़किर–ए– अलख़वास'' के लेखक ने लिखा है कि ''बैअत करने वालों की संख्या 25 हज़ार तक पहुंच गई थी।''

जनाबे मुस्लिम को हुसैन (अ0) ने उस पत्र के उत्तर में भेजा था कि जिसमें कूफ़ियों ने आप पर हुज्जत कायम करना चाही थी। यानी न आने पर खराबियों का ज़िम्मेदार ठहराना चाहा था। परन्तु आप तो स्वयं हुज्जते खुदा थे। यानी ईश्वर का प्रमाण थे। मुस्लिम बिन अक़ील को अपना उत्तराधिकारी बना कर पथ के सुधार के उद्देश्य से भेजा था। झगडे लड़ाई का कोई विचार नहीं था। जनाबे मुस्लिम ने इस उद्देश्य को सफलभूत बनाने का भरपूर प्रयत्न किया और हुसैनी उद्देश्य को सफल बनाते हुए कूफ़े को सर कर लिया। आज तक किसी इतिहासकार को यह अवसर न मिल सका कि वह आपकी आलोचना कर सके। जबकि संसारियों ने हुसैन और यज़ीद के बारे में भी यह फ़ैसला कर दिया कि यह दो राजकुमारों के बीच युद्ध था। वास्तविकता यह है कि यदि हुसैन (अ0) का उद्देश्य राजपाट पाना होता तो जिस समय जनाबे मुस्लिम कूफ़े पहुँचे थे और अधिकांश लोगों ने आपकी बैअत कर ली थी और उस समय के शासक नोमान बिन बशीर ने उस पर ध्यान न दिया था तब बनी उमैय्या के समर्थकों ने यज़ीद को पत्र लिखा कि यहाँ इमाम हुसैन (अ0) के प्रतिनिधि मुस्लिम आ चुके हैं और लोगों ने उनकी बैअत स्वीकार कर ली है। ऐसी स्थिति में यदि कूफ़े की हालत और जनता को संभालना है तो नोमान बिन बशीर को पदच्युत कर किसी कठोर शासक को नियुक्त कर दो।''

तो उस समय जनाबे मुस्लिम (अ0) के साथ बहुत से लोग थे। उसी समय राजधानी पर आक्रमण करके कहानी ही समाप्त की जा सकती थी। और इस तरह शासन की बागडोर मुस्लिम (अ0) के माध्यम से इमाम हुसैन (अ0) तक पहुँच जाती। लेकिन इमाम हुसैन (अ0) का उद्देश्य युद्ध नहीं था। बादशाह बनने की इच्छा नहीं थी। युद्ध की पहल अपनी ओर से कभी नहीं करना चाहते थे। और अगर जनाबे मुस्लिम राजभवन पर आक्रमण कर देते तो लोग यही कहते कि युद्ध का प्रारम्भ हुसैन (अ0) की ओर से हुआ। रसूल के सुपुत्र की दूरदर्शिता ने इस तथ्य को पहले से ही देख लिया था। मुस्लिम बिन अक़ील ने उससे अपने को दूर रखा और संसार पर स्पष्ट रूप से यह प्रकट कर दिया कि यह राजकुमारों का युद्ध नहीं है। यह कूफ़्र और इस्लाम का मोर्चा है और इसकी सफलता का पताका सदैव हमारे हाथ रहा है। यद्यपि आपके कुछ सहाबियों की भी यह राय थी कि राजभवन

पर अधिकार कर लिया जाये और इस तरह सत्ता हथिया ली जाये, जिसका विवरण आगे दिया जायेगा। यज़ीद को जब यह सूचना मिली कि इमाम हुसैन (अ0) के दूत जनाबे मुस्लिम कूफ़े पहुंच गये हैं वहां का शासन हाथों से निकला जा रहा है तो सरजॉन को बुलाया जो मुआविया का दास था यज़ीद के पालन पोषण में उसने काफ़ी हिस्सा लिया था उससे परामर्श किया कि कूफ़ा हमारे हाथ से जा रहा है, क्या किया जाये ? सरजॉन ने थोड़ी खामोशी के बाद कहा कि ''एक बात मैं कहता हूँ जिससे तुम सफल हो जाओगे, लेकिन उससे क्रोधित न होना।'' यज़ीद ने पूछा कि वह क्या है ? कहा कि अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को कूफ़े का शासक बना कर भेज दो। वह उस काम के लिए उपयुक्त है ''यज़ीद ने एक पत्र अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को लिखा कि वह बसरा छोड़कर तुरन्त कूफ़े पहुंच जाये। ऐसा न हो कि हुसैन (अ0) तेरे पहुंचने से पहले ही वहां पहुंच जायें और मुस्लिम बिन अक़ील और वह लोग जिन्होंने उनकी बैअत की है, उनसे मेरी बैअत लो। अगर हुसैन भी वहाँ हो तो उनसे भी बैअत की मांग करो। अगर यह लोग बैअत न करें तो उनके सिर काटकर मेरे पास भेज दो।'' जब यह पत्र इब्ने ज़ियाद को प्राप्त हुआ तो वह खुश हुआ और तुरन्त अपने चचेरे भाई को बसरे का राज्यपाल नियुक्त कर कूफ़े की ओर प्रस्थान कर गया।

इब्ने ज़ियाद को जब यह ज्ञात हुआ कि शरीक बिन आवर हानी बिन उरवा के यहां बीमार पड़े हुए हैं। तो उसने संदेश भेजा कि मैं कल उनको देखने आ रहा हूँ। जनाबे मुस्लिम भी उस वक़्त हानी बिन उरवा के घर पर ही ठहरे हुए थे। शरीक बिन आवर ने आपसे कहा कि इब्ने ज़ियाद कल जब मुझे देखने आयेगा तो एक अलग कमरे में छुप जाना और धोखे से आ कर उसकी हत्या कर देना।'' आप ने इन्कार कर दिया कि मैं एसा कदापि नहीं करूंगा।' जब अगले दिन इब्ने ज़ियाद आया। मुस्लिम (अ0) अलग कमरे में चले गये। वह बातचीत में तल्लीन हुआ। शरीक बिन आवर ने संकेत से बार–बार बुलाना चाहा फिर भी मुस्लिम (अ0) हत्या करने के लिए राज़ी नहीं हुए। जब इब्ने ज़ियाद वापस चला गया तो शरीक बिन आवर ने जनाबे मुस्लिम से कहा, '' आपने उसको कत्ल क्यों नहीं किया।'' आपने उत्तर दिया कि ''मेरे सामने मेरे चाचा का कथन था कि कोई मोमिन कभी किसी को धोखे से हाानि नहीं पहुँचाता दूसरा यह कथन था कि जब लोगों ने मेरे चचा के साथ ध ोखाधड़ी से काम लिया था तो आपने कहा था कि यदि धोखाधड़ी से मुझे घृणा न होती तो मैं निश्चित रूप से सब से अधिक चतुर होता। इसलिए मैंने इस काम से अपने को बचाया। जनाबे मुस्लिम (अ0) अहले बैत के आचरण को प्रस्तुत करके बता रहे थे। कि हमारा उद्देश्य युद्ध नहीं है वरन'' हुज्जत'' पूरी करके प्रमाण प्रस्तुत करके सत्य को असत्य से अलग करना है। इब्ने ज़ियाद ने कूफ़े के निकट पहुंच कर सर्वप्रथम जो कार्य प्रारम्भ किया वो धोखा व मक्कारी थी। काला अमामा पगड़ी सर पर रखा। कन्धे पर चादर डाली ताकि कूफ़े के लोग देख के यह समझें कि इमाम हुसैन आ रहे हैं। हुआ भी यही कि लोग भ्रम में पड़कर पीछे–पीछे लगे और राज भवन तक साथ रहे। आखिरकार आवाज़ से कुछ भेद खुला कि यह रसूल के पुत्र नहीं हैं। नोमान भी छत पर से देख रहा था। तो यही समझ रहा था कि यह ''रसूल'' के पुत्र हैं।'' यहाँ तक कि उसने आवाज़ दी कि हे रसूल के पुत्र वापस पलट जायें। यह नगर आपके रहने योग्य नहीं है। इस पर यज़ीद का अधिपत्य है।'' लेकिन नोमान का दरवाज़ा नहीं खुला। लोग बुरा भला कहने लगे कि पैग़म्बर के पुत्र के लिए दरवाज़ा नहीं खोला। अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने जब यह विश्वास कर लिया कि नोमान दरवाज़ा नहीं खोलेगें। अपने सिर से पगड़ी उतार दी और कहा कि दरवाज़ा खोलो नोमान समझ गया कि बात क्या है लोग भी अपने–अपने घरों को वापस लौट गये। इब्ने ज़ियाद ने यज़ीद का संदेश लोगों को सुनाया कि ''यज़ीद ने मुझे तुम्हारे नगर का संरक्षक, अत्याचार पीड़ितों के साथ न्याय करने वाला और वंचित लोगों के लिए सहायता का सूत्र बनाकर भेजा है। ताकि बात मानने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करूं और अवज्ञा करने वालों के साथ लड़ाई। परन्तु यज़ीद के आदेशों का पालन अनिवार्य रूप से करना है। उसके आदेशों का क्रियान्वयन आवश्यक है। सज्जनों के साथ सहानुभूति और विरोधियों के सिर पर मेरी तलवार है।''तत्पश्चात लोगों पर बल का प्रयोग प्रारम्भ कर

दिया। और कहा कि जो यज़ीद के विरोधी हैं उनकी सूची तैयार कर मेरे समक्ष प्रस्तुत की जाये। जनाबे मुस्लिम मुख़्तार के घर से हानी बिन उरवा के घर चले आये। जो उस युग के प्रमुख लोगों में माने जाते थे अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को उसी रात सूचना मिली कि मुस्लिम हानी के घर चले गये हैं। बिन ज़ियाद ने धमकीला भाषण देते हुए कहा कि मैं भली भांति जानता हूँ मुस्लिम किसके घर में है। लेकिन उसके लिए जब तक अमान नहीं है जब तक हुसैन की बैअत से अलग न हो जाये। बिने ज़ियाद अपनी कूटनीति से काम निकालना चाहता था बसरे से एक ऐसे अजनबी को बुलाया जिसको कूफ़ियों में कोई नहीं जानता था। उसको तीन हज़ार दिरहम देकर कहा कि ''हानी'' के घर जाओ और उससे कहो कि मैं आप से बात करना चाहता हूँ। यदि आप अनुमति दें तो कहूँ। मैं अमुक–अमुक हूँ। बसरा से मिलने आया हूँ। हमारे पास इमाम हुसैन (अ0) का पत्र आया है। वह मक्का से प्रस्थान कर चुके है और कूफ़े अमुक समय पहुंच जायेगे। हानी से कहना कि मेरा मुस्लिम बिन अक़ील से सम्पर्क करा दें ताकि में उनकी बैअत करूं और वापस लौट जाऊँ। अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के भय के कारण यहाँ ठहर नहीं सकता हूँ। इस तरह वह हानी के घर पहुँचा और उनसे कहा कि मैं इस कारण आया हूँ। हानी उसको एकांत में ले गये उसने मुस्लिम (अ0) के हाथों पर बैअत की और अबदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास पहुँच कर उसे स्थिति से अवगत कराया। उसने परामर्शियों से सलाह की ''हानी'' को बुलाया गया। जब हानी बिन ज़ियाद के दरबार में पहुँचे तो बिन ज़ियाद ने कहा कि आप काल के मुँह में स्वयं प्रवेश किए है। हानी बैठ गये फिर बिन ज़ियाद ने कहा कि'' मेरा पिता ज़ियाद यहां आया था। उसने अली बिन अबी तालिब के शीओं की चुन–चुन कर हत्यायें कीं। आपको और हुज्र बिन अदी को सज्जन समझता था। अतः छोड़ दिया था। मैं अमीर यज़ीद का भेजा हुआ हूँ। चाहता हूँ। कि एक मांग तुम से करूँ वह यह कि यज़ीद के शत्रु मुस्लिम बिन अक़ील को मेरे सुपुर्द कर दो। हानी ने कहा कि वह मेरे घर में नहीं हैं। इब्ने ज़ियाद ने जवाब दिया कि मैंने अमुक व्यक्ति को भेजा था। उसने मुस्लिम के हाथ पर बैअत की। हानी झेप गये लेकिन फिर कहा कि ''वह दूसरे घर से मेरे यहाँ आये थे। इब्ने ज़ियाद ने कहा कि मुस्लिम तुम्हारे यहाँ हैं। उन्हें मेरे सुपुर्द कर दो। जब हानी विवश हो गये तो आप ने कहा कि ''यदि मुस्लिम (अ0) मेरे पैर के नीचे भी होंगे तो मैं पैरों को नहीं हिला सकता। इब्ने ज़ियाद ने एक लोहे की छड़ी आपको पर मारी। यह समाचार नगर में जंगल की आग की तरह फैल गया कि हानी की हत्या कर दी गई है। जनाबे मुस्लिम ने इस दुखद समाचार सुनने के बाद भी इब्ने ज़ियाद के महल पर आक्रमण नहीं किया बल्कि एक व्यक्ति को भेज कर जानकारी प्राप्त की। हानी पर जो जो अत्याचार हुए थे उसने बताये। ऐसी परिस्थितियों में जनाबे मुस्ल्मि ने आवश्यक समझा कि उन दुःखों और अत्याचारों से मुक्ति दिलाई जाये जो कि अत्याचारी शासक ने किये थे। फिर यह आक्रमण नहीं था वरन एक प्रतिरोध था। आप उन लोगों के साथ जिन्होंने आप की बैअत कर ली थी इब्ने ज़ियाद के महल की ओर चले। इब्ने ज़ियाद ने जब जुलूस के नारों की आवाज़ सुनी तो वह अपने समर्थकों के साथ महल के अन्दर चला गया और द्वार बन्द करवा दिए ! बिन ज़ियाद ने कुछ लोगों को कोठे पर भेजा और कूफ़ियों को डराया धमकाया। अल्लाह से डरो। अपने ऊपर शाम की सेना न ठूसों। तुम्हारे रोगियों के बजाय स्वस्थ व नवयुवकों को बन्दी बनाया जायेगा शाम की सेना अत्याचार करेगी और रक्त बहायेगी। अब वह आने ही वाली है। यह सुनकर स्त्रियों ने अपने वारिसों के गले में बाहें डाल दी। बच्चे दामन खीचने लगे। कूफ़े के भीरू लोग मुस्लिम (अ0) को छोड़ कर अपने–अपने घरों में चले गये। लेकिन हाशिमी वंश की हिम्मत का क्या कहना कि इतने बड़े गिरोह के तितर–बितर हो जाने के बाद भी नहीं डरे। जनाबे मुस्लिम ने केवल तीस आदमियों के साथ नमाज़ पढ़ी और जब आप नमाज़ पढ़कर चले तो केवल तीन आदमी ही साथ थे। वह भी इधर हो गये। आप पैदल कूफ़े की गलियों में घूमने लगे। लेकिन प्रदेश में न कोई सहानुभूति करने वाला न दुख बटाने वाला कहाँ जाय क्या करें।

इब्ने ज़ियाद को जब विश्वास हो गया कि अब कोई ख़तरा नहीं है अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि जहां कहीं मुस्लिम (अ0) को पाओ

बन्दी कर के मेरे सामने उपस्थित करो। मुस्लिम (अ0) रात्रि के अन्धेरे में शरण स्थल खोजते रहे, लेकिन आत्म सम्मान यह अनुमति नहीं दे रहा था। कि किसी से कुछ कहें। आपने देखा कि एक स्त्री दरवाज़े पर खड़ी है। उस स्त्री से कहा कि मुझे पानी पिला दो। वह स्त्री पानी लाई और आपने वो पिया और वही बैठे रहे। उस स्त्री ने कहा कि हे भाई यह समय बहुत खराब है वातावरण बहुत दूषित है। तुम पानी पी चुके। अब अपने घर चले जाओ। मुस्लिम (अ0) ने गर्दन झुका ली और कुछ देर तक सोचते रहे और कहा कि मेरा घर यहां नहीं है। मैं मदीने से आया हूँ। स्त्री ने पूछा तुम कौन हो और किस परिवार से हो ? आपने उत्तर दिया कि मैं मुस्लिम बिन अक़ील हूँ। स्त्री यह सुनते ही पैरों पर गिर पड़ी, जिसका नाम तौआ था। तौआ ने कहा कि आप मेरे घर पधारें। घर में लायी और बिस्तर लगाया वह मोमिना कभी उस कमरे में जाती और कभी बाहर आ जाती इसी बीच उसका लड़का आ गया तौआ ने पूछा कि बेटा तुम कहाँ थे ? मैं बिन ज़ियाद के दरबार से आ रहा हूँ अम्मा। उसने यह घोषणा की है कि जो मुस्लिम की खोज लगा देगा उसको धन दौलत से माला माल कर दिया जायेगा लड़के ने बताया। माँ परेशान होकर बोली बेटा तुम्हें इससे क्या मतलब लड़का शायद माँ की परेशानी भाप चुका था उसने पूछा कि अम्मा यह बताओ कि इस कमरे में आप क्यों बार–बार जाती हैं। तौआ ने बात टालनी चाही लड़का आग्रह करने लगा माँ ने कहा कसम खाओ कि यह बात किसी से नहीं कहोगे तो बता दूँ। इस कमरे में मुस्लिम हमारे मेहमान हैं माँ ने बता दिया। लड़का दुनिया के माल की लालच से रात भर नहीं सोया और सवेरे बिन ज़ियाद को जा के बता दिया कि मुस्लिम हमारे घर में हैं। थोड़ी ही देर में तौआ का घर घेर लिया गया और जनाबे मुस्लिम भी फ़ौज के मुक़ाबले के लिए निकल पड़े। और घमासान का रन पड़ा। मोहम्मद बिन अश्अस ने और सैनिक की मदद माँगी। बिन ज़ियाद ने कहा कि एक आदमी के लिए कितनी फ़ौज चाहिए। इब्ने अश्अस ने जवाब दिया कि मोर्चा पैग़म्बर के घराने के योद्धा से है। किसी साधारण व्यक्ति से नहीं। और फ़ौज आयी, फिर भी लड़ाई में सर बर न हो सकी जहाँ जनाबे मुस्लिम थे उधर गड्ढ़ा खोदा गया। और तलवार के बजाय पत्थर चलाए जाने लगे। हज़रत मुस्लिम ज़ख्मों की ताब न लासके और उसी गड्ढ़े में जा गिरे। फिर दुश्मन की फ़ौज टूट पड़ी और बन्दी बना के इब्ने ज़ियाद के दरबार ले गयी। आपने इब्ने ज़ियाद को सलाम नहीं किया। आप से कहा गया कि ''अमीर'' को सलाम करो। हज़रत मुस्लिम ने जवाब दिया कि हुसैन के अलावा मेरा ''अमीर'' कौन है इब्ने ज़ियाद बोला सलाम करो या न करो क़त्ल तो किए ही जाआगे। उससे तो बच नहीं सकते।

जनाबे मुस्लिम ने कहा कि मैं कुछ वसीयतें करना चाहता हूँ। कोई है जो मेरी वसीयत माने उमर बिन साद ने हामी भरी। जनाबे मुस्लिम ने कहा कि मैं वसीयत एकान्त में करना चाहता हूँ। एकान्त में आपने इब्ने साद से पूछा कि तुम मेरी वसीयत मानोगे। उसने फिर स्वीकृति दी तब आप ने फ़रमाया कि मेरे पास एक हज़ार दीनार हैं यह इमाम के पास पहुंचा देना। मेरे क़त्ल की सूचना भेज देना और कहलवा देना कि इमाम कूफ़े तशरीफ़ न लायें। कूफ़े वाले विश्वसनीय नहीं हैं और इन्होंने बैअत तोड़ दी है। फिर आप को छत पर ले जाया गया और आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और खुदा का शुक्र अदा किया। और मुसलमानों को यह सबक़ दे गये कि मौत की गोद में भी पैग़म्बर के घराने वाले किसी हाल में ईश्वर को धन्यवाद देना नहीं भूलते। फिर आप को क़त्ल करके शव नीचे फेंक दिया गया और सिर यज़ीद के पास भेज दिया गया।

बाक़ी पेज नं0 37 का ....)

लखनऊ की सरज़मीन पर भी ऐसा ही कुछ दृश्य पिछले दस वर्षों में देखने को मिल रहा है। काश आज माहोल बदलता और मुहर्रम के दिनों में सभी मुसलमान यह संकल्प लेते कि हम लोग जोर जुल्म अत्याचार, को मिटाने एवं सत्य व अहिंसा की रक्षा हेतु एक दूसरे से कंधे स कंधा मिलाकर चलेगे तथा दूसरों के दुख दर्द को अपना दुख दर्द समझेगे जो कि इमाम हुसैन का मुख्य लक्ष्य था हज़रत इमाम हुसैन (अ0) की याद में निकलने वाले अज़ादारी के जुलूस भी बन्द हैं। उन्हें सभी मुसलमान मिलकर फिर से निकालते तो यह समझा जाता की रसूले इसलाम का कलमा पढ़ने वाले मुसलमान नवासे रसूल के बताये हुए रास्ते पर चल रहे हैं।